

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥  
॥ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ॥  
॥ श्रीरामचरितमानस पञ्चम सोपान श्री सुन्दरकाण्ड ॥

॥ श्लोक ॥

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं  
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ॥  
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं  
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥  
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये  
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ॥  
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे  
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥  
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं  
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥  
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं  
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥

॥ चौपाई ॥

जामवंत के बचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥  
तब लागि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई । सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥  
जब लागि आवौं सीतहि देखी । होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी ॥  
यह कहि नाइ सबन्हि कहूँ माथा । चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा ॥  
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर । कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥  
बार बार रघुबीर सँभारी । तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥  
जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥  
जिमि अमोघ रघुपति कर बना । एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥  
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी । तैं मैनाक होहि श्रमहारी ॥

**दोहा:** हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।  
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम ॥

॥ चौपाई ॥

जात पवनसुत देवन्ह देखा । जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेषा ॥  
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता । पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता ॥  
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा । सुनत बचन कह पवनकुमारा ॥  
राम काजु करि फिरि मैं आवौं । सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥  
तब तव बदन पैठिहउँ आई । सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥  
कबनेहुँ जतन देइ नहिं जाना । ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥  
जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा । कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ॥  
सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ । तुरत पवनसुत बतिस भयऊ ॥  
जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा । तासु दून कपि रूप देखावा ॥  
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा । अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ॥  
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा । मागा बिदा ताहि सिरु नावा ॥  
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा । बुधि बल मरमु तोर मै पावा ॥

**दोहा:** राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान ।  
आसिष देह गई सो हरषि चलेउ हनुमान ॥

॥ चौपाई ॥

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई । करि माया नभु के खग गहई ॥  
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं । जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं ॥  
गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई । एहि बिधि सदा गगनचर खाई ॥  
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा । तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा ॥  
ताहि मारि मारुतसुत बीरा । बारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥  
तहाँ जाइ देखी बन सोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥  
नाना तरु फल फूल सुहाए । खग मृग बृंद देखि मन भाए ॥  
सैल बिसाल देखि एक आगें । ता पर धाइ चढेउ भय त्यागें ॥  
उमा न कछु कपि कै अधिकाई । प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥

गिरि पर चढि लंका तेहिं देखी । कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी ॥  
अति उतंग जलनिधि चहु पासा । कनक कोट कर परम प्रकासा ॥

॥ छंद ॥

कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना ॥  
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारु पुर बहु बिधि बना ॥  
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथिन्ह को गनै ॥  
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै ॥  
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं ॥  
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥  
कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं ॥  
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहु बिधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥  
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं ॥  
कहुँ महिष मानषु धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥  
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही ॥  
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही ॥

**दोहा:** पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार ।  
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ॥

॥ चौपाई ॥

मसक समान रूप कपि धरी । लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥  
नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥  
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा । मोर अहार जहाँ लागि चोरा ॥  
मुठिका एक महा कपि हनी । रुधिर बमत धरनीं ढनमनी ॥  
पुनि संभारि उठि सो लंका । जोरि पानि कर बिनय संसका ॥  
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा । चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥  
बिकल होसि तैं कपि कें मारे । तब जानेसु निसिचर संघारे ॥  
तात मोर अति पुन्य बहूता । देखेउँ नयन राम कर दूता ॥

**दोहा** - तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।  
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥4 ॥

॥ चौपाई ॥

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा । हृदयँ राखि कौसलपुर राजा ॥  
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई । गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥  
गरुड़ सुमेरु रेनू सम ताही । राम कृपा करि चितवा जाही ॥  
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना । पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥  
मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा । देखे जहँ तहँ अगनित जोधा ॥  
गयउ दसानन मंदिर माहीं । अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं ॥  
सयन किए देखा कपि तेही । मंदिर महुँ न दीखि बैदेही ॥  
भवन एक पुनि दीख सुहावा । हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥

**दोहा** - रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ ।  
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरषि कपिराइ ॥

॥ चौपाई ॥

लंका निसिचर निकर निवासा । इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ॥  
मन महुँ तरक करै कपि लागा । तेहीं समय बिभीषनु जागा ॥  
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा । हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥  
एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी । साधु ते होइ न कारज हानी ॥  
बिप्र रुप धरि बचन सुनाए । सुनत बिभीषण उठि तहँ आए ॥  
करि प्रनाम पूँछी कुसलाई । बिप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥  
की तुम्ह हरि दासन्ह महुँ कोई । मोरें हृदय प्रीति अति होई ॥  
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी । आयहु मोहि करन बड़भागी ॥

**दोहा** - तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम ।  
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम ॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी । जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी ॥  
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा । करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा ॥  
तामस तनु कछु साधन नाहीं । प्रीति न पद सरोज मन माहीं ॥  
अब मोहि भा भरोस हनुमंता । बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता ॥  
जौ रघुबीर अनुग्रह कीन्हा । तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥  
सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती । करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥  
कहहु कवन मैं परम कुलीना । कपि चंचल सबहीं बिधि हीना ॥  
प्रात लेइ जो नाम हमारा । तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥

**दोहा:** अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर ।  
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥

॥ चौपाई ॥

जानतहूँ अस स्वामि बिसारी । फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥  
एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा । पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा ॥  
पुनि सब कथा बिभीषन कही । जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही ॥  
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता । देखी चहउँ जानकी माता ॥  
जुगुति बिभीषन सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥  
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ । बन असोक सीता रह जहवाँ ॥  
देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा । बैठेहिं बीति जात निसि जामा ॥  
कृस तन सीस जटा एक बेनी । जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ॥

**दोहा:** निज पद नयन दिऐँ मन राम पद कमल लीन ।  
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥४ ॥

॥ चौपाई ॥

तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई । करइ बिचार करौं का भाई ॥  
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा । संग नारि बहु किऐँ बनावा ॥  
बहु बिधि खल सीतहि समुझावा । साम दान भय भेद देखावा ॥  
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी । मंदोदरी आदि सब रानी ॥

तव अनुचरीं करउँ पन मोरा । एक बार बिलोकु मम ओरा ॥  
तृन धरि ओट कहति बैदेही । सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥  
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा ॥  
अस मन समुझु कहति जानकी । खल सुधि नहिं रघुबीर बान की ॥  
सठ सूने हरि आनेहि मोहि । अधम निलज्ज लाज नहिं तोही ॥

**दोहा:** आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान ।  
परुष बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन ॥

॥ चौपाई ॥

सीता तैं मम कृत अपमाना । कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना ॥  
नाहिं त सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होति न त जीवन हानी ॥  
स्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ॥  
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा । सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥  
चंद्रहास हरु मम परितापं । रघुपति बिरह अनल संजातं ॥  
सीतल निसित बहसि बर धारा । कह सीता हरु मम दुख भारा ॥  
सुनत बचन पुनि मारन धावा । मयतनयाँ कहि नीति बुझावा ॥  
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई ॥  
मास दिवस महुँ कहा न माना । तौ मैं मारबि काढ़ि कृपाना ॥

**दोहा:** भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद ।  
सीतहि त्रास देखावहि धरहिं रूप बहु मंद ॥10 ॥

॥ चौपाई ॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका । राम चरन रति निपुन बिबेका ॥  
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥  
सपनें बानर लंका जारी । जातुधान सेना सब मारी ॥  
खर आरूढ़ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥  
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई । लंका मनहुँ बिभीषन पाई ॥  
नगर फिरी रघुबीर दोहाई । तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥

यह सपना में कहउँ पुकारी । होइहि सत्य गएँ दिन चारी ॥  
तासु बचन सुनि ते सब डरीं । जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥

**दोहा:** जहँ तहँ गई सकल तब सीता कर मन सोच ।  
मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥

॥ चौपाई ॥

त्रिजटा सन बोली कर जोरी । मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥  
तजौं देह करु बेगि उपाई । दुसहु बिरहु अब नहिं सहि जाई ॥  
आनि काठ रचु चिता बनाई । मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥  
सत्य करहि मम प्रीति सयानी । सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥  
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि । प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि ॥  
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी । अस कहि सो निज भवन सिधारी ॥  
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला । मिलहि न पावक मिटिहि न सूला ॥  
देखिअत प्रगट गगन अंगारा । अवनि न आवत एकउ तारा ॥  
पावकमय ससि स्त्रवत न आगी । मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥  
सुनहि बिनय मम बिटप असोका । सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥  
नूतन किसलय अनल समाना । देहि अग्नि जनि करहि निदाना ॥  
देखि परम बिरहाकुल सीता । सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥

॥ सोरठा: ॥

कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारी तब ।  
जनु असोक अंगार दीन्हि हरषि उठि कर गहेउ ॥

॥ चौपाई ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर ॥  
चकित चितव मुदरी पहिचानी । हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी ॥  
जीति को सकइ अजय रघुराई । माया तैं असि रचि नहिं जाई ॥  
सीता मन बिचार कर नाना । मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ॥  
रामचंद्र गुन बरनैं लागा । सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥

लागीं सुनैं श्रवन मन लाई । आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥  
श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई । कहि सो प्रगट होति किन भाई ॥  
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ । फिरि बैंठीं मन बिसमय भयऊ ॥  
राम दूत मैं मातु जानकी । सत्य सपथ करुनानिधान की ॥  
यह मुद्रिका मातु मैं आनी । दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥  
नर बानरहि संग कहु कैसें । कहि कथा भइ संगति जैसें ॥

**दोहा:** कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास ॥  
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास ॥

॥ चौपाई ॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी । सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥  
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना । भयउ तात मों कहँ जलजाना ॥  
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी । अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥  
कोमलचित कृपाल रघुराई । कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥  
सहज बानि सेवक सुख दायक । कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥  
कबहुँ नयन मम सीतल ताता । होइहहि निरखि स्याम मृदु गाता ॥  
बचनु न आव नयन भरे बारी । अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥  
देखि परम बिरहाकुल सीता । बोला कपि मृदु बचन बिनीता ॥  
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥  
जनि जननी मानहु जियँ ऊना । तुम्ह ते प्रेमु राम केँ दूना ॥

**दोहा:** रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर ।  
अस कहि कपि गद गद भयउ भरे बिलोचन नीर ॥

॥ चौपाई ॥

कहेउ राम बियोग तव सीता । मो कहँ सकल भए बिपरीता ॥  
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू । कालनिसा सम निसि ससि भानू ॥  
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा । बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥  
जे हित रहे करत तेइ पीरा । उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ॥



कहेहू तें कछु दुख घटि होई । काहि कहौ यह जान न कोई ॥  
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥  
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं । जानु प्रीति रसु एतेनहि माहीं ॥  
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही । मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥  
कह कपि हृदयँ धीर धरु माता । सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥  
उर आनहु रघुपति प्रभुताई । सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥

**दोहा:** निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु ।  
जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥

॥ चौपाई ॥

जौं रघुबीर होति सुधि पाई । करते नहिं बिलंबु रघुराई ॥  
रामबान रबि उएँ जानकी । तम बरूथ कहँ जातुधान की ॥  
अबहिं मातु मै जाउँ लवाई । प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ॥  
कछुक दिवस जननी धरु धीरा । कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा ॥  
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं । तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥  
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना । जातुधान अति भट बलवाना ॥  
मोरें हृदय परम संदेहा । सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा ॥  
कनक भूधराकार सरीरा । समर भयंकर अतिबल बीरा ॥  
सीता मन भरोस तब भयऊ । पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ॥

**दोहा:** सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल ।  
प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल ॥

॥ चौपाई ॥

मन संतोष सुनत कपि बानी । भगति प्रताप तेज बल सानी ॥  
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना । होहु तात बल सील निधाना ॥  
अजर अमर गुननिधि सुत होहू । करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ॥  
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना । निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥  
बार बार नाएसि पद सीसा । बोला बचन जोरि कर कीसा ॥

अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता । आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥  
सुनुहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥  
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचर भारी ॥  
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं । जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥

**दोहा:** देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु ।  
रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु ॥

॥ चौपाई ॥

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । फल खाएसि तरु तोरें लागा ॥  
रहे तहाँ बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥  
नाथ एक आवा कपि भारी । तेहिं असोक बाटिका उजारी ॥  
खाएसि फल अरु बिटप उपारे । रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥  
सुनि रावन पठए भट नाना । तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥  
सब रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ॥  
पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ॥  
आवत देखि बिटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥

**दोहा:** कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि ।  
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना । पठएसि मेघनाद बलवाना ॥  
मारसि जनि सुत बांधेसु ताही । देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ॥  
चला इंद्रजित अतुलित जोधा । बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥  
कपि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥  
अति बिसाल तरु एक उपारा । बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥  
रहे महाभट ताके संग्गा । गहि गहि कपि मर्दइ निज अंग्गा ॥  
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ॥  
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई । ताहि एक छन मुरुछा आई ॥

उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया । जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥

**दोहा:** ब्रह्म अस्त्र तेहिं साँधा कपि मन कीन्ह बिचार ।  
जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार ॥

॥ चौपाई ॥

ब्रह्मबान कपि कहूँ तेहि मारा । परतिहुँ बार कटकु संघारा ॥  
तेहि देखा कपि मुरुछित भयऊ । नागपास बाँधेसि लै गयऊ ॥  
जासु नाम जपि सुनहु भवानी । भव बंधन काटहिं नर ग्यानी ॥  
तासु दूत कि बंध तरु आवा । प्रभु कारज लागि कपिहिं बँधावा ॥  
कपि बंधन सुनि निसिचर धाए । कौतुक लागि सभाँ सब आए ॥  
दसमुख सभा दीखि कपि जाई । कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥  
कर जोरें सुर दिसिप बिनीता । भृकुटि बिलोकत सकल सभीता ॥  
देखि प्रताप न कपि मन संका । जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका ॥

**दोहा:** कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद ।  
सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ बिषाद ॥

॥ चौपाई ॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा । केहिं के बल घालेहि बन खीसा ॥  
की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही । देखउँ अति असंक सठ तोही ॥  
मारे निसिचर केहिं अपराधा । कहु सठ तोहि न प्राण कइ बाधा ॥  
सुन रावन ब्रह्मांड निकाया । पाइ जासु बल बिरचित माया ॥  
जाकेँ बल बिरंचि हरि ईसा । पालत सृजत हरत दससीसा ॥  
जा बल सीस धरत सहसानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥  
धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता । तुम्ह ते सठन्ह सिखावनु दाता ॥  
हर कोदंड कठिन जेहि भंजा । तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥  
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली । बधे सकल अतुलित बलसाली ॥

**दोहा:** जाके बल लवलेस तैं जितेहु चराचर झारि ।

तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥

॥ चौपाई ॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लराई ॥  
समर बालि सन करि जसु पावा । सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा ॥  
खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा । कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा ॥  
सब कें देह परम प्रिय स्वामी । मारहिं मोहि कुमारग गामी ॥  
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे । तेहि पर बाँधेउ तनयँ तुम्हारे ॥  
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा । कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ॥  
बिनती करउँ जोरि कर रावन । सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥  
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी । भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी ॥  
जाकें डर अति काल डेराई । जो सुर असुर चराचर खाई ॥  
तासों बयरु कबहुँ नहिं कीजै । मोरे कहें जानकी दीजै ॥

**दोहा:** प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु खरारि ।  
गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥

॥ चौपाई ॥

राम चरन पंकज उर धरहू । लंका अचल राज तुम्ह करहू ॥  
रिषि पुलिस्त जसु बिमल मंयका । तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ॥  
राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥  
बसन हीन नहिं सोह सुरारी । सब भूषण भूषित बर नारी ॥  
राम बिमुख संपति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ॥  
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं । बरषि गए पुनि तबहिं सुखाहीं ॥  
सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी । बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥  
संकर सहस बिष्णु अज तोही । सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥

**दोहा:** मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।  
भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान ॥

## ॥ चौपाई ॥

जदपि कहि कपि अति हित बानी । भगति बिबेक बिरति नय सानी ॥  
बोला बिहसि महा अभिमानी । मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी ॥  
मृत्यु निकट आई खल तोही । लागेसि अधम सिखावन मोही ॥  
उलटा होइहि कह हनुमाना । मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ॥  
सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना । बेगि न हरहुँ मूढ़ कर प्राणा ॥  
सुनत निसाचर मारन धाए । सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए ॥  
नाइ सीस करि बिनय बहूता । नीति बिरोध न मारिअ दूता ॥  
आन दंड कछु करिअ गोसाँई । सबहीं कहा मंत्र भल भाई ॥  
सुनत बिहसि बोला दसकंधर । अंग भंग करि पठइअ बंदर ॥

**दोहा:** कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ ।  
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥

## ॥ चौपाई ॥

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि । तब सठ निज नाथहि लइ आइहि ॥  
जिन्ह कै कीन्हसि बहुत बड़ाई । देखेउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥  
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भइ सहाय सारद मैं जाना ॥  
जातुधान सुनि रावन बचना । लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना ॥  
रहा न नगर बसन घृत तेला । बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥  
कौतुक कहँ आए पुरबासी । मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी ॥  
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥  
पावक जरत देखि हनुमंता । भयउ परम लघु रुप तुरंता ॥  
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं । भई सभीत निसाचर नारीं ॥

**दोहा:** हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास ।  
अट्टहास करि गर्जा कपि बढि लाग अकास ॥

## ॥ चौपाई ॥

देह बिसाल परम हरुआई । मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई ॥

जरइ नगर भा लोग बिहाला । झपट लपट बहु कोटि कराला ॥  
तात मातु हा सुनिअ पुकारा । एहि अवसर को हमहि उबारा ॥  
हम जो कहा यह कपि नहिं होई । बानर रूप धरें सुर कोई ॥  
साधु अवग्या कर फलु ऐसा । जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥  
जारा नगरु निमिष एक माहीं । एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥  
ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा । जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥  
उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

**दोहा:** पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।  
जनकसुता के आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥

॥ चौपाई ॥

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा ॥  
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ । हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥  
कहेहु तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥  
दीन दयाल बिरिदु संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥  
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु । बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ॥  
मास दिवस महँ नाथु न आवा । तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा ॥  
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राणा । तुम्हहू तात कहत अब जाना ॥  
तोहि देखि सीतलि भइ छाती । पुनि मो कहँ सोइ दिनु सो राती ॥

**दोहा:** जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह ।  
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥

॥ चौपाई ॥

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । गर्भ स्त्रवहिं सुनि निसिचर नारी ॥  
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा । सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा ॥  
हरषे सब बिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥  
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा । कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा ॥  
मिले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पाव जिमि बारी ॥

चले हरषि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥  
तब मधुबन भीतर सब आए । अंगद संमत मधु फल खाए ॥  
रखवारे जब बरजन लागे । मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥

**दोहा:** जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज ।  
सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज ॥

॥ चौपाई ॥

जौं न होति सीता सुधि पाई । मधुबन के फल सकहिं कि खाई ॥  
एहि बिधि मन बिचार कर राजा । आइ गए कपि सहित समाजा ॥  
आइ सबन्हि नावा पद सीसा । मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा ॥  
पूँछी कुसल कुसल पद देखी । राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ॥  
नाथ काजु कीन्हैउ हनुमाना । राखे सकल कपिन्ह के प्राणा ॥  
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ । कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ ॥  
राम कपिन्ह जब आवत देखा । किँएँ काजु मन हरष बिसेषा ॥  
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई । परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥

**दोहा:** प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज ।  
पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥

॥ चौपाई ॥

जामवंत कह सुनु रघुराया । जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥  
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर । सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥  
सोइ बिजई बिनई गुन सागर । तासु सुजसु त्रेलोक उजागर ॥  
प्रभु कीं कृपा भयउ सबु काजू । जन्म हमार सुफल भा आजू ॥  
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी । सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥  
पवनतनय के चरित सुहाए । जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥  
सुनत कृपानिधि मन अति भाए । पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ॥  
कहहु तात केहि भाँति जानकी । रहति करति रच्छा स्वप्राण की ॥

**दोहा:** नाम पाहरु दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट ।  
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ॥

॥ चौपाई ॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही । रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ॥  
नाथ जुगल लोचन भरि बारी । बचन कहे कछु जनककुमारी ॥  
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना । दीन बंधु प्रनतारति हरना ॥  
मन क्रम बचन चरन अनुरागी । केहि अपराध नाथ हौं त्यागी ॥  
अवगुन एक मोर मैं माना । बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥  
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा । निसरत प्रान करिहिं हठि बाधा ॥  
बिरह अग्नि तनु तूल समीरा । स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ॥  
नयन स्त्रवहि जलु निज हित लागी । जरैं न पाव देह बिरहागी ॥  
सीता के अति बिपति बिसाला । बिनहिं कहे भलि दीनदयाला ॥

**दोहा:** निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति ।  
बेगि चलिय प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजिव नयना ॥  
बचन काँय मन मम गति जाही । सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही ॥  
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई । जब तव सुमिरन भजन न होई ॥  
केतिक बात प्रभु जातुधान की । रिपुहि जीति आनिबी जानकी ॥  
सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥  
प्रति उपकार करौं का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥  
सुनु सुत उरिन मैं नाहीं । देखेउँ करि बिचार मन माहीं ॥  
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता ॥

**दोहा:** सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत ।  
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥



## ॥ चौपाई ॥

बार बार प्रभु चहइ उठावा । प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ॥  
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा । सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥  
सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुंदर ॥  
कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ॥  
कहु कपि रावन पालित लंका । केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका ॥  
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला बचन बिगत अभिमाना ॥  
साखामृग के बड़ि मनुसाई । साखा तें साखा पर जाई ॥  
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचर गन बिधि बिपिन उजारा ॥  
सो सब तव प्रताप रघुराई । नाथ न कछु मोरि प्रभुताई ॥

**दोहा:** ता कहँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकुल ।  
तब प्रभावं बड़वानलहिं जारि सकइ खलु तूल ॥

## ॥ चौपाई ॥

नाथ भगति अति सुखदायनी । देहु कृपा करि अनपायनी ॥  
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥  
उमा राम सुभाउ जेहिं जाना । ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥  
यह संवाद जासु उर आवा । रघुपति चरन भगति सोइ पावा ॥  
सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबृंदा । जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥  
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा । कहा चलैं कर करहु बनावा ॥  
अब बिलंबु केहि कारन कीजे । तुरत कपिन्ह कहँ आयसु दीजे ॥  
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी । नभ तें भवन चले सुर हरषी ॥

**दोहा:** कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ ।  
नाना बरन अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥

## ॥ चौपाई ॥

प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा । गरजहिं भालु महाबल कीसा ॥  
देखी राम सकल कपि सेना । चितइ कृपा करि राजिव नैना ॥

राम कृपा बल पाइ कपिंदा । भए पच्छजुत मनहुँ गिरिंदा ॥  
हरषि राम तब कीन्ह पयाना । सगुन भए सुंदर सुभ नाना ॥  
जासु सकल मंगलमय कीती । तासु पयान सगुन यह नीती ॥  
प्रभु पयान जाना बैदेहीं । फरकि बाम अँग जनु कहि देहीं ॥  
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई । असगुन भयउ रावनहि सोई ॥  
चला कटकु को बरनै पारा । गर्जहि बनर भालु अपारा ॥  
नख आयुध गिरि पादपधारी । चले गगन महि इच्छाचारी ॥  
केहरिनाद भालु कपि करहीं । डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥

॥ छंद ॥

चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे ।  
मन हरष सभ गंधर्ब सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे ॥  
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ॥  
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥  
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई ॥  
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ट कठोर सो किमि सोहई ॥  
रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ॥  
जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी ॥

**दोहा:** एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।  
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ॥

॥ चौपाई ॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका । जब ते जाइ गयउ कपि लंका ॥  
निज निज गृहँ सब करहिं बिचारा । नहिं निसिचर कुल केर उबारा ॥  
जासु दूत बल बरनि न जाई । तेहि आँ पुर कवन भलाई ॥  
दूतन्हि सन सुनि पुरजन बानी । मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥  
रहसि जोरि कर पति पग लागी । बोली बचन नीति रस पागी ॥  
कंत करष हरि सन परिहरहू । मोर कहा अति हित हियँ धरहू ॥  
समुझत जासु दूत कइ करनी । स्त्रवहीं गर्भ रजनीचर धरनी ॥

तासु नारि निज सचिव बोलाई । पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥  
तब कुल कमल बिपिन दुखदाई । सीता सीत निसा सम आई ॥  
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें । हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥

**दोहा:** राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक ।  
जब लागि ग्रसत न तब लागि जतनु करहु तजि टेक ॥

॥ चौपाई ॥

श्रवन सुनी सठ ता करि बानी । बिहसा जगत बिदित अभिमानी ॥  
सभय सुभाउ नारि कर साचा । मंगल महुँ भय मन अति काचा ॥  
जौं आवइ मर्कट कटकाई । जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ॥  
कंपहिं लोकप जाकी त्रासा । तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥  
अस कहि बिहसि ताहि उर लाई । चलेउ सभाँ ममता अधिकाई ॥  
मंदोदरी हृदयँ कर चिंता । भयउ कंत पर बिधि बिपरीता ॥  
बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई । सिंधु पार सेना सब आई ॥  
बूझिसि सचिव उचित मत कहहू । ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥  
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं । नर बानर केहि लेखे माहीं ॥

**दोहा:** सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस ।  
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ॥

॥ चौपाई ॥

सोइ रावन कहूँ बनि सहाई । अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥  
अवसर जानि बिभीषनु आवा । भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥  
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन । बोला बचन पाइ अनुसासन ॥  
जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता । मति अनुरूप कहउँ हित ताता ॥  
जो आपन चाहै कल्याना । सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना ॥  
सो परनारि लिलार गोसाई । तजउ चउथि के चंद कि नाई ॥  
चौदह भुवन एक पति होई । भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई ॥  
गुन सागर नागर नर जोऊ । अलप लोभ भल कहइ न कोऊ ॥

**दोहा:** काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।  
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत ॥

॥ चौपाई ॥

तात राम नहिं नर भूपाला । भुवनेस्वर कालहु कर काला ॥  
ब्रह्म अनामय अज भगवंता । व्यापक अजित अनादि अनंता ॥  
गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपासिंधु मानुष तनुधारी ॥  
जन रंजन भंजन खल ब्राता । बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥  
ताहि बयरु तजि नाइअ माथा । प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥  
देहु नाथ प्रभु कहूँ बैदेही । भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥  
सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा । बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥  
जासु नाम त्रय ताप नसावन । सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ॥

**दोहा:** बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस ।  
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥  
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।  
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात ॥

॥ चौपाई ॥

माल्यवंत अति सचिव सयाना । तासु बचन सुनि अति सुख माना ॥  
तात अनुज तव नीति बिभूषन । सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ॥  
रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ । दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥  
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी । कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ॥  
सुमति कुमति सब कें उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥  
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥  
तव उर कुमति बसी बिपरीता । हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥  
कालराति निसिचर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

**दोहा:** तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।

सीत देहु राम कहँ अहित न होइ तुम्हार ॥

॥ चौपाई ॥

बुध पुरान श्रुति संमत बानी । कही बिभीषन नीति बखानी ॥  
सुनत दसानन उठा रिसाई । खल तोहि निकट मुत्यु अब आई ॥  
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥  
कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल जाहि जिता मैं नाही ॥  
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥  
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा । अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥  
उमा संत कइ इहइ बड़ाई । मंद करत जो करइ भलाई ॥  
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा । रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ॥  
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ । सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

**दोहा:** रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।  
मै रघुबीर सरन अब जाऊँ देहु जनि खोरि ॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि चला बिभीषनु जबहीं । आयूहीन भए सब तबहीं ॥  
साधु अवग्या तुरत भवानी । कर कल्यान अखिल कै हानी ॥  
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा । भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥  
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥  
देखिहउँ जाइ चरन जलजाता । अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥  
जे पद परसि तरी रिषिनारी । दंडक कानन पावनकारी ॥  
जे पद जनकसुताँ उर लाए । कपट कुरंग संग धर धाए ॥  
हर उर सर सरोज पद जेई । अहोभाग्य मै देखिहउँ तेई ॥

**दोहा:** जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ ।  
ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥

॥ चौपाई ॥

एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा । आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ॥  
 कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा । जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ॥  
 ताहि राखि कपीस पहिं आए । समाचार सब ताहि सुनाए ॥  
 कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । आवा मिलन दसानन भाई ॥  
 कह प्रभु सखा बूझिऐ काहा । कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥  
 जानि न जाइ निसाचर माया । कामरूप केहि कारन आया ॥  
 भेद हमार लेन सठ आवा । राखिअ बाँधि मोहि अस भावा ॥  
 सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी । मम पन सरनागत भयहारी ॥  
 सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना । सरनागत बच्छल भगवाना ॥

**दोहा:** सरनागत कहूँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।  
 ते नर पावँर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥

॥ चौपाई ॥

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू । आँ सरन तजउँ नहिं ताहू ॥  
 सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं । जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ॥  
 पापवंत कर सहज सुभाऊ । भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ॥  
 जौं पै दुष्टहृदय सोइ होई । मोरें सनमुख आव कि सोई ॥  
 निर्मल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥  
 भेद लेन पठवा दससीसा । तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ॥  
 जग महुँ सखा निसाचर जेते । लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ॥  
 जौं सभीत आवा सरनाई । रखिहउँ ताहि प्रान की नाई ॥

**दोहा:** उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत ।  
 जय कृपाल कहि चले अंगद हनू समेत ॥

॥ चौपाई ॥

सादर तेहि आगें करि बानर । चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥  
 दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता । नयनानंद दान के दाता ॥  
 बहुरि राम छबिधाम बिलोकी । रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ॥

भुज प्रलंब कंजारुन लोचन । स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥  
सिंघ कंध आयत उर सोहा । आनन अमित मदन मन मोहा ॥  
नयन नीर पुलकित अति गाता । मन धरि धीर कही मृदु बाता ॥  
नाथ दसानन कर मैं भ्राता । निसिचर बंस जनम सुरत्राता ॥  
सहज पापप्रिय तामस देहा । जथा उलूकहि तम पर नेहा ॥

**दोहा:** श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।  
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ॥  
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा । भुज बिसाल गहि हृदयँ लगावा ॥  
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी । बोले बचन भगत भयहारी ॥  
कहु लंकेस सहित परिवारा । कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥  
खल मंडलीं बसहु दिनु राती । सखा धरम निबहइ केहि भाँती ॥  
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती । अति नय निपुन न भाव अनीती ॥  
बरु भल बास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ॥  
अब पद देखि कुसल रघुराया । जौं तुम्ह कीन्ह जानि जन दाया ॥

**दोहा:** तब लागि कुसल न जीव कहूँ सपनेहुँ मन बिश्राम ।  
जब लागि भजत न राम कहूँ सोक धाम तजि काम ॥

॥ चौपाई ॥

तब लागि हृदयँ बसत खल नाना । लोभ मोह मच्छर मद माना ॥  
जब लागि उर न बसत रघुनाथा । धरें चाप सायक कटि भाथा ॥  
ममता तरुन तमी अँधिआरी । राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥  
तब लागि बसति जीव मन माहीं । जब लागि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ॥  
अब मैं कुसल मिटे भय भारे । देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥  
तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला । ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला ॥  
मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ । सुभ आचरनु कीन्ह नहीं काऊ ॥

जासु रूप मुनि ध्यान न आवा । तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा ॥

**दोहा:** अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज ।  
देखेउँ नयन बिरंचि सिब सेव्य जुगल पद कंज ॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ । जान भुसुंठि संभु गिरिजाऊ ॥  
जौं नर होइ चराचर द्रोही । आवे सभय सरन तकि मोही ॥  
तजि मद मोह कपट छल नाना । करउँ सद्य तेहि साधु समाना ॥  
जननी जनक बंधु सुत दारा । तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ॥  
सब कै ममता ताग बटोरी । मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ॥  
समदरसी इच्छा कछु नाहीं । हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥  
अस सज्जन मम उर बस कैसें । लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें ॥  
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें । धरउँ देह नहिं आन निहोरें ॥

**दोहा:** सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम ।  
ते नर प्रान समान मम जिन्ह कें द्विज पद प्रेम ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें । तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥  
राम बचन सुनि बानर जूथा । सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ॥  
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी । नहिं अघात श्रवनामृत जानी ॥  
पद अंबुज गहि बारहिं बारा । हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥  
सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥  
उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥  
अब कृपाल निज भगति पावनी । देहु सदा सिव मन भावनी ॥  
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा । मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥  
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं । मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥  
अस कहि राम तिलक तेहि सारा । सुमन बृष्टि नभ भई अपारा ॥



**दोहा:** रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।  
जरत बिभीषनु राखेउ दीन्हेहु राजु अखंड ॥  
जो संपति सिव रावनहि दीन्हे दिऐँ दस माथ ।  
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्ह रघुनाथ ॥

॥ चौपाई ॥

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना । ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना ॥  
निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥  
पुनि सर्वग्य सर्व उर बासी । सर्वरूप सब रहित उदासी ॥  
बोले बचन नीति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥  
सुनु कपीस लंकापति बीरा । केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ॥  
संकुल मकर उरग झष जाती । अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥  
कह लंकेस सुनहु रघुनायक । कोटि सिंधु सोषक तव सायक ॥  
जद्यपि तदपि नीति असि गाई । बिनय करिअ सागर सन जाई ॥

**दोहा:** प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ।  
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ॥

॥ चौपाई ॥

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई । करिअ दैव जौं होइ सहाई ॥  
मंत्र न यह लछिमन मन भावा । राम बचन सुनि अति दुख पावा ॥  
नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ॥  
कादर मन कहूँ एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ॥  
सुनत बिहसि बोले रघुबीरा । ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ॥  
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई । सिंधु समीप गए रघुराई ॥  
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥  
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए । पाछें रावन दूत पठाए ॥

**दोहा:** सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह ।  
प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं सरनागत पर नेह ॥

## ॥ चौपाई ॥

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ । अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥  
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने । सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥  
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर । अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥  
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए । बाँधि कटक चहु पास फिराए ॥  
बहु प्रकार मारन कपि लागे । दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥  
जो हमार हर नासा काना । तेहि कोसलाधीस कै आना ॥  
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए । दया लागि हँसि तुरत छोडाए ॥  
रावन कर दीजहु यह पाती । लछिमन बचन बाचु कुलघाती ॥

**दोहा:** कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार ।  
सीता देइ मिलेहु न त आवा काल तुम्हार ॥

## ॥ चौपाई ॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा । चले दूत बरनत गुन गाथा ॥  
कहत राम जसु लंकाँ आए । रावन चरन सीस तिन्ह नाए ॥  
बिहसि दसानन पूँछी बाता । कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥  
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी । जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥  
करत राज लंका सठ त्यागी । होइहि जब कर कीट अभागी ॥  
पुनि कहु भालु कीस कटकाई । कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥  
जिन्ह के जीवन कर रखवारा । भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा ॥  
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी । जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी ॥

**दोहा:** की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर ।  
कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर ॥

## ॥ चौपाई ॥

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें । मानहु कहा क्रोध तजि तैसें ॥  
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । जातहिं राम तिलक तेहि सारा ॥

रावन दूत हमहि सुनि काना । कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥  
श्रवन नासिका काटै लागे । राम सपथ दीन्हे हम त्यागे ॥  
पूँछिहु नाथ राम कटकाई । बदन कोटि सत बरनि न जाई ॥  
नाना बरन भालु कपि धारी । बिकटानन बिसाल भयकारी ॥  
जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा ॥  
अमित नाम भट कठिन कराला । अमित नाग बल बिपुल बिसाला ॥

**दोहा:** द्विबिद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि ।  
दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि ॥

॥ चौपाई ॥

ए कपि सब सुग्रीव समाना । इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥  
राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं । तृन समान त्रेलोकहि गनहीं ॥  
अस मैं सुना श्रवन दसकंधर । पदुम अठारह जूथप बंदर ॥  
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं । जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं ॥  
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥  
सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला । पूरहीं न त भरि कुधर बिसाला ॥  
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा । ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा ॥  
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका । मानहु ग्रसन चहत हहिं लंका ॥

**दोहा:** सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।  
रावन काल कोटि कहु जीति सकहिं संग्राम ॥

॥ चौपाई ॥

राम तेज बल बुधि बिपुलाई । तब भ्रातहि पूँछेउ नय नागर ॥  
तासु बचन सुनि सागर पाहीं । मागत पंथ कृपा मन माहीं ॥  
सुनत बचन बिहसा दससीसा । जौं असि मति सहाय कृत कीसा ॥  
सहज भीरु कर बचन दढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ॥  
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥  
सचिव सभीत बिभीषन जाकें । बिजय बिभूति कहाँ जग ताकें ॥

सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी । समय बिचारि पत्रिका काढ़ी ॥  
रामानुज दीन्ही यह पाती । नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती ॥  
बिहसि बाम कर लीन्ही रावन । सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥

**दोहा:** बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस ।  
राम बिरोध न उबरसि सरन बिष्णु अज ईस ॥  
की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग ।  
होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥

॥ चौपाई ॥

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई । कहत दसानन सबहि सुनाई ॥  
भूमि परा कर गहत अकासा । लघु तापस कर बाग बिलासा ॥  
कह सुक नाथ सत्य सब बानी । समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ॥  
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा । नाथ राम सन तजहु बिरोधा ॥  
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ । जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥  
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही । उर अपराध न एकउ धरिही ॥  
जनकसुता रघुनाथहि दीजे । एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥  
जब तेहिं कहा देन बैदेही । चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥  
नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ । कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥  
करि प्रनामु निज कथा सुनाई । राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥  
रिषि अगस्ति कीं साप भवानी । राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी ॥  
बंदि राम पद बारहिं बारा । मुनि निज आश्रम कहुँ पगु धारा ॥

**दोहा:** बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीति ।  
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥

॥ चौपाई ॥

लछिमन बान सरासन आनू । सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू ॥  
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपन सन सुंदर नीती ॥  
ममता रत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन बिरति बखानी ॥

क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बँएँ फल जथा ॥  
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा । यह मत लछिमन के मन भावा ॥  
संघानेउ प्रभु बिसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥  
मकर उरग झष गन अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥  
कनक थार भरि मनि गन नाना । बिप्र रूप आयउ तजि माना ॥

**दोहा:** काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच ।  
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच ॥

॥ चौपाई ॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥  
गगन समीर अनल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥  
तव प्रेरित मायाँ उपजाए । सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥  
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई । सो तेहि भाँति रहे सुख लहई ॥  
प्रभु भल कीन्ही मोहि सिख दीन्ही । मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ॥  
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ॥  
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई । उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥  
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई । करौं सो बेगि जौ तुम्हहि सोहाई ॥

**दोहा:** सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।  
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ ॥

॥ चौपाई ॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई । लरिकाई रिषि आसिष पाई ॥  
तिन्ह के परस किँएँ गिरि भारे । तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥  
मैं पुनि उर धरि प्रभुताई । करिहउँ बल अनुमान सहाई ॥  
एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ । जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ॥  
एहि सर मम उत्तर तट बासी । हतहु नाथ खल नर अघ रासी ॥  
सुनि कृपाल सागर मन पीरा । तुरतहिं हरी राम रनधीरा ॥  
देखि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी ॥

सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

॥ छंद ॥

निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ ॥  
यह चरित कलि मलहर जथामति दास तुलसी गायऊ ॥  
सुख भवन संसय समन दवन बिषाद रघुपति गुन गना ॥  
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥

**दोहा:** सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।  
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ॥

॥ मासपारायण, चौबीसवाँ विश्राम ॥

॥ इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने पञ्चमः सोपानः  
समाप्तः ॥

श्री रामचरितमानस का यह पंचम सोपान समाप्त हुआ ॥  
जय सियाराम जय जय सियाराम ॥  
जय सियाराम जय जय सियाराम ॥

[www.hanumanchalisalrylic.com](http://www.hanumanchalisalrylic.com)